International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 23-02-2026, Accepted: 25-03-2026, Published: 09-04-2026
Volume 8, Issue 2, 2026, Page No. 13-15

सामाजिक मीडिया पर संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की भूमिका

एस. स्वाती
शोधार्थी, हिंदी विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी, केरल, भारत

सारांश
'हिंदी' भाषा आज सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लोगों के बीच का एक प्राथमिक संपर्क भाषा के रूप में स्थापित हो रही है। मानव के विचारों के आदान–प्रदान में बाधा के रूप में दो तत्व उत्पन्न होते हैं–दूरी और भाषा ।
सोशल मीडिया इन दोनों बाधाओं को तोड़कर मानव को विश्वभर का पहुँच देता है। दुनिया भर के लोग एक जगह पर मिलकर किसी भी भाषा में अपने विचार का आदान–प्रदान करते हैं। ऐसे विभिन्न क्षेत्रों के बीच संचार का रास्ता मिलता है और वाट्स एप, फेसबुक, ट्विट्टर जैसे प्लाटफार्म भाषिक अंतर को भी संभालते हैं।

मूल शब्दः हिंदी भाषा, सोशल मीडिया, संपर्क भाषा, वैश्विक संचार, भाषिक विविधता

संपर्क भाषा से तात्पर्य

भाषा के संदर्भ में इस्तेमाल होने वाला 'संपर्क' शब्द अंग्रेज़ी के लिंक शब्द के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है। इस तरह संपर्क भाषा का अर्थ होता है जोड़नेवाली भाषा । वह ऐसी भाषा होगा जो दो अलग–अलग भाषाओं को बोलनेवाले लोगों को जोड़ती है। उनके बीच संपर्क स्थापित करने का माध्यम बनती है।
बहुभाषी देश में संपर्क भाषा का महत्व काफी अधिक होता है। वहाँ के लोगों के जीवन की रोजमर्रा के जरूरतों से लेकर राष्ट्रीय स्तर के कार्यों तक के लिए ऐसी भाषा की जरूरत पड़ती है जो वहाँ की विभिन्न भाषाओं को बोलनेवाले लोगों के संपर्क का माध्यम बन सके।
भारत एक बहुभाषी देश हैं। यहाँ कश्मीर से कन्याकुमारी तक और द्वारिका से असम तक अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोलने वाले लोग रहते हैं। ये लोग एक भाग से दूसरे भाग की यात्रा न केवल घूमने–फिरने के शौक के लिए या तीर्थाटन के लिए करते हैं बल्कि व्यापार, व्यवसाय, शिक्षा, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कार्यकलाप के लिए भी करते हैं। ऐसी स्थिति में ऐसी भाषा की जरूरत होती है जिसमें बंग्ला बोलने वाला पंजाबी बोलने वाला से या गुजराती बोलने वाला उडिया बोलने वाले से विचारों का आदान प्रदान कर सके । इस कार्य में इस्तेमाल होनेवाली भाषा ही संपर्क भाषा कहलाती है।
हिंदी भारत की प्रमुख संपर्क भाषा है, जो देश के विभिन्न भाषी समुदायों को जोड़ती है। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में 57ः से अधिक लोग हिंदी जानते हैं, जिससे यह उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक संवाद का एक प्रभावी माध्यम बन गई है। यह व्यापार, पर्यटन, मनोरंजन, और दैनिक बातचीत में राष्ट्र को एकीकृत करने वाली सबसे व्यापक भाषा है।

सोशल मीडिया

यूनानी दार्शनिक अरस्तू का एक प्रसिद्ध कथन है–"मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है"। सामाजिक प्राणी होने के कारण हम समूह में मिल–जुलकर रहते हैं। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समाज के अन्य सदस्यों पर निर्भर करता है। मनुष्य का अकेला कोई अस्तित्व नहीं है। उसे जीवित रहने के लिए दूसरों की सहायता की आवश्यकता होती है। वह दूसरों के द्वारा पाला जाता है। वह दूसरों से सीखता है। वह दूसरों के साथ संपर्क करता है। एक ऐसा व्यक्ति जो समाज से पूरी तरह कटा हो, वह अधिक दिनों तक अपना अस्तित्व नहीं बनाए रख पाएगा । यहाँ तक कि जिस व्यक्ति का कोई दोस्त नहीं होता उसे भी जरूरतों के लिए समाज के अन्य लोगों पर निर्भर रहना पड़ता है।
समाज शास्त्र की आधारशिला रखने वाले विचारकों में एक प्रसिद्ध समाजशास्त्री दुर्खिम (Emile Durkheim) का विचार है कि समाज पहले है और व्यक्ति बाद में । इस प्रकार हम समझा जा सकता है कि सामूहिक प्रतिनिधित्व करने वाले विचार समाज के निर्माण के आधार होते हैं न कि किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत विचार। समाज में व्यक्तिगत चेतना सामूहिक चेतना में तब्दील हो जाती है। यही चेतना सोशल मीडिया का भी आधार है।
सोशल मीडिया हमारा समाज का विस्तार है। वह समाज का ही एक मॉडल है। यहाँ भी सामाजिक कार्य ज़ारी हो रहे हैं। सोशल मीडिया एक वर्चुअल स्थान है, यहाँ समाज के लोग विभिन्न जगहों पर इकट्ठे होकर अपने विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। सोशल मीडिया तकनीकी उपकरणों द्वारा मानव अंतः क्रिया यानि इंटरेक्शन से उत्पन्न हुआ एक स्थान है।

सोशल मीडिया की परिभाषा (तकनीकी विशेषज्ञों के अनुसार)

वेब 2. 0 की नीव पर आधारित एक इंटरैक्टिव प्लेटफार्म है जिसके द्वारा व्यक्ति एवं समुदाय यूजर जेनेरेटेड कंटेंट का निर्माण और साझा करते हैं।

'हिंदी' सोशल मीडिया की भाषा

भारत दुनिया में तीसरा बड़ा फेसबुक उपयोगकर्ता है, तीसरा सबसे बड़ा इंटरनेट बाज़ार है। इस कडी में सोशल मीडिया के बाजार के लिए एक और आँकडा महत्वपूर्ण हो जाता है कि हिंदी विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जानेवाली भाषा है।
आज सोशल मीडिया पर हिंदी के उपयोगकर्ता बडी संख्या में मौजूद है और दिन–प्रतिदिन इस संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है। वास्तव में सोशल मीडिया पर हिंदी को लोकप्रिय बनाने का श्रेय ब्लॉग "नौ दो ग्यारह" की शुरुआत से लेकर सोशल मीडिया पर अब तक हिन्दी ने लगभग 10 साल का सफर तय कर लिया है। आज से एक दशक पहले हिन्दी लिखना एक जटिल कार्य था और केवल तकनीक में निपुण व्यक्ति ही ऐसा कर पाते थे जो रेमिंगटन टाइपिंग या इन्स्क्रिप्ट टाइपिंग जानते थे । हिंदी लेखन में क्रांति 2007 में इंडिक यूनिकोड के आगमन से आई ।
अब फोनेटिक टाइपिंग द्वारा हिंदी लिखा जाने लगा । जैसे–"मैं ट्विट्टर पसंद करता हूँ" को देवनागरी में लिखना हो तो इसे रोमन में ऐसे लिखेंगे "main twitter pasand karta hun"

इससे इंटरनेट पर हिंदी में लिखना काफी आसान हुआ और इसके बाद तो हिंदी वेबसाइटों की बाढ़ आ गयी ।

हिंदी भाषी राज्य दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ हैं। अगर केवल इन क्षेत्रों की जनसंख्या की गणना की जाए तो यह लगभग 56 करोड़ के आस–पास आती है। यह संख्या इतनी बडी है कि विश्व में जनसंख्या के हिसाब में यह चीन और भारत की कुल जनसंख्या के बाद तीसरे नंबर पर आती है। संयुक्त राज्य अमेरिका की जनसंख्या भी 31 करोड यानी लगभग इसकी आधी है।

हालांकि हिंदी भाषी राज्यों के अतिरिक्त पूरे हिंदुस्तान में हिंदी थोडा बहुत समझी, बोली, जानी अवश्य जाती है। अब इतनी बडी जनसंख्या को अगर सोशल बनाना है तो इसमें सोशल मीडिया एक महत्वपूर्ण उपकरण बन सकता है।

यद्यपि आरंभ में सोशल मीडिया के प्रमुख उपकरण अंग्रेज़ी में थे तथापि बाद में लोगों से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया को भी बहुभाषी होना पड़ा ।

आज हम देख रहे है सोशल मीडिया के कई उपकरण हिंदी में भी उपलब्ध हैं। फेसबुक, ट्विटर जैसे बडे खिलाडियों के वेबसाइट हिंदी में हैं। बड़ी संख्या में इन पर लोग हिंदी में अपने विचारों, लेखों, कविताओं, कहानियों व रचनात्मक कृतियों का प्रदर्शन कर रहे हैं।

लगभग 400 मिलियन भारतीयों को इंटरनेट की सुविधा प्राप्त है। वे इंटरनेट को अपने दोस्त, रिश्तों से संचार के लिए, वीडियो देखने के लिए, गाना सुनने के लिए, ई–बुक्स पढ़ने के लिए, ई–न्यूजपेपर के लिए और ऑनलाइन शॉपिंग के लिए उपयोग करते हैं। ग्रामीण क्षेत्र लोगों को अंग्रेजी भाषा का ज़्यादा ज्ञान नहीं होते हैं, उनको तकनीकी विकास के कारण उपकरण और इंटरनेट उपलब्ध है।

हिन्दी एवं सोशल मीडिया के द्वारा विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों द्वारा संचालित जनकल्याण की विभिन्न योजनाओं की जानकारी आम नागरिक को आसानी से उपलब्ध हो सकेगी जिससे गरीब, पिछड़ा एवं कमज़ोर वर्ग इससे लाभ उठाकर देश की मुख्य धारा में जुड़ सकेगा।

पहले–पहल अमेज़ान 100 मिलियन कस्टमर्स को ध्यान में रखकर हिंदी भाषा में शॉपिंग एप शुरू किया था। बाद में फ्लिप्कार्ट, जबोंग और पे टीएम भी जुड़ गए। माइंड शिफ्ट द्वारा किए गए सर्वे में यह बात मिली कि क्षेत्रीय भाषा वेबसाइटें साल में 56ः बढ़ रहे हैं, अंग्रेजी भाषा की वेबसाइट 11ः बढ रहे हैं।

हिंदी आज राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ऑडियन्स का ध्यान आकर्षित कर रही है। इसमें गूगल, फेसबुक, ट्विट्टर, इन्स्टाग्राम और यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया प्लाटफर्म हिंदी का समाविष्ट कर रहे हैं। हिंदी बोलनेवाले विश्वभर में 600 मिलियन है। यह बड़ी संख्या में बोलनेवाली भाषाओं में एक है। भारत की राजभाषा है, लेकिन विश्वभर के डयास्पोरा समुदाय द्वारा बोली जाती है और मान्यता प्राप्त है। वैश्वीकरण में हिंदी भाषा के सोशल मीडिया का मुख्य भाग है।

सोशल मीडिया हिंदी भाषा के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान किया है।

कामन सेन्स अड्वैसरी के रिपोर्ट के अनुसार कस्टमर्स नेटिव भाषा को पसंद कर रहे हैं। फेसबुक जैसे सोशल मीडिया छात्रों को व्याकरण शुद्धि, शब्दावली और लेखन के विकास में सहायक है। फेसबुक, ट्विट्टर और इन्स्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लाटफार्स में विश्वभर के हिंदी बोलनेवाले हैं। इसके द्वारा हम भारत के त्योहार और परंपरा का बढ़ावा कर रहे हैं। इस तरह सांस्कृतिक विनिमय होता है। #दीवाली,# होली जैसे हेशटाग्स से दुनिया भर से मेसेज आते है, इससे हिंदी संस्कृति का वैश्वीकरण हमें देखने को मिलता है।

हिंदी बोलनेवाली समुदाय सोशल मीडिया में बहुत मजबूत बन गए हैं। रेडिट जैसे प्लाटफार्म 'हिंदी भाषा सबरेडिट' द्वारा हिंदी में विभिन्न बातों की चर्चा करने का अवसर देता है। यह विश्व स्तर पर हिंदी के उपयोग में एकता बनाते हैं।

भारतवासियों जो विदेश में रहते हैं, उन्हें अपने जड़ और विरासत से संबंध स्थापित करने में सोशल मीडिया मदद करता है। यह दुनिया भर के इंडियन समुदायों को संवाद करना, अपना अनुभव साझा करना और अपनी संस्कृति को मनाने का अवसर मिलता है।

सोशल मीडिया में हिंदी मीम्स और ह्यूमर कंटेंट है। मीम्स में ज्यादातर हिंदी मुहावरे और बोलचाल के प्रयोग है। वे सिर्फ मनोरंजन ही नहीं वह उपयोगकर्ताओं को सहज–हल्के रूप में बड़ा–बड़ा पाठ शिक्षित करता है।

पिछले दो दशक के दौरान सोशल मीडिया केवल भारतीय किशोरों के बीच ही नहीं, बल्कि पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधियों के बीच में भी लोकप्रिय हो गया है।

संचार क्रांति के दौर में जब कंप्यूटर और इंटरनेट पर हिंदी में लिखने–पढ़ने की शुरुआत हुई तो ब्लॉग लेखन का जबर्दस्त उभार हुआ। निजी और सामूहिक ब्लॉग लेखन ने वैकल्पिक पत्रकारिता की नींव डाली और आज भी ब्लॉग लेखन साहित्य, कला और संस्कृति के साथ जन पत्रकारिता का भी एक बड़ा माध्यम बना हुआ है। यह एक तरह से अभिव्यक्ति के लोकतंत्र का विस्तार है , जिसमें मुख्यधारा की पत्रकारिता के बरक्स सामूहिक और जनतंत्रात्मक सरोकारों की बात संभव है। संचार क्रांति की यह बहुत बड़ी उपलब्धि है और ब्लॉग के बाद प्रचलित हुए फेसबुक, ट्वीटर, वाट्सऐप आदि सोशल मीडिया माध्यमों ने अभिव्यक्ति की इस जनतांत्रिकता को और भी विस्तार किया।

सोशल मीडिया ने जिस तरह की निकटता पिछले कुछ वर्षों में पैदा की है, वह देखने में भले ही कितनी भी आभासी लगे, लेकिन इस आभासी संसार ने हिंदी के संसार को वैश्विक बना दिया है।

दुनिया के किसी भी कोने में हिन्दी लिखने–पढ़ने वाला व्यक्ति बैठा हो, वह अपने परिवेश में अपने दुःख–सुख की व्यथा–कथा, उस हिंदी में व्यक्त कर रहा है, जो उसने अपनी सांस्कृतिक भूमि से अर्जित की है। और इसे पढ़नेवाला पाठक अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अर्जित भाषा के संस्कार वाला पाठक पढ कर उस पर टिप्पणी कर रहा है। इस तरह दो नहीं अनेकानेक भिन्न भाषाई संस्कारों की हिंदी इस वैश्विक परिदृश्य में सोशल मीडिया पर दिखाई दे रही है।

सोशल मीडिया ने सार्वजनिक अभिव्यक्ति और एक बड़े समुदाय तक निडर और बिना रोक–टोक और नियंत्रण के अपनी बात, अपनी सोच और अनुभव पहुँचाना संभव बनाकर करोड़ों लोगों को एक नई ताकत, छोटी बड़ी बहसों में भागीदारी का नया स्वाद और हिम्मत दी है।

आज सोशल मीडिया में फेसबुक और वाहसऐप पर कई रचनात्मक और भाषाई समूह बन गए है, जहाँ दुनिया भर से लोग संवाद कर रहे हैं। भाषा की दृष्टि से इस तरह की सामूहिकता एक नई भाषा को जन्म देती है, क्योंकि वहाँ नए–नए शब्द संवाद में आकार सहज हो रहे हैं। जैसे अवधी–भोजपुरी का 'मने' आज हिंदी में इतना सामान्य हो गया है कि लगता ही नहीं कि किसी स्थानीय बोली–बानी से आया है। मोबाइल फोन के वाट्स ऐप में तो लगता है कि रचनात्मक क्रांति हो रही हैं।

उपसंहार

आज के समय में गाँव या शहर कहीं भी कभी भी हम सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं। संदेश भेजने के लिए, ज्ञानार्जन

के लिए, जागरूकता लाने के लिए सोशल मीडिया का अधिक सहयोग है। भारत जैसे बहुभाषिक देश में एक संपर्क भाषा के रूप में सोशल मीडिया में हिंदी भाषा का प्रयोग लोगों को जोड़ने के लिए महत्वपूर्ण योगदान निभा रहे हैं। हिंदी का प्रसार और उपयोग विश्व स्तर पर व्यापक बन गए हैं। रचनामक ब्लॉग, प्रवासी साहित्य, सांस्कृतिक विनिमय, सूचना क्रांति, और क्या नहीं है, हिंदी आज सोशल मीडिया के मंच पर मुख्य पात्र धारण करके विश्व की दूरी को कम किया और सोशल मीडिया का आधार तत्व सामाजिकता को दृढ़ स्थापित करने में सफल हो रही है।

संदर्भ

1. स्वर्ण सुमन , सोशल मीडिया–सम्पर्क क्रांति का कल, आज और कल, हार्परकॉलिंस पब्लिशेर्स इंडिया, 2014
2. Ms. Shaina, Dr. Ruchi Sharma, Dr. Mandeep Kumar, Rising Impact Of Hindi Language On Internet Sites ,ISBN: 978–81–954645–0–0
3. Dr-Anshu Puri, Globalization Paradox: SocialMedia's Role In Shaping Hindi Language Worldwide, E–ISSN : 2348–1269
4. अंजु चौधरी, सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा का प्रयोग एवं महत्व, प्रवाहिनी अंक 25 (2018)
5. राहुल देव, सोशल मीडिया और हिंदी,
6. https:/ /www.jagran. com/editorial/apnibaat–social–media–and–hindi–14693905.html